विचार बिन्दु

निरन्तर बदलने की इच्छा रखना एक ताकत होती है, चाहे इसकी वजह से कंपनी का एक बड़ा हिस्सा कुछ देर के लिए पूरी तरह से अव्यवस्थित क्यों ना हो जाए। –जैक वेल्च

परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम में देश का बड़ा कदम

इस माह के पहले हफ्ते में भारत ने परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम में एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की जब तमिलनाडु के कल्पक्कम में 500 मेगावाट के फास्ट ब्रीडर रिएक्टर के प्रोटोटाइप ने सफलतापूर्वक पहली क्रिटिकैलिटी हासिल कर ली है। इसका अर्थ है कि इस संयंत्र में परमाणु के लगातार चल सकने वाली नियंत्रित विखंडन श्रृंखला की शुरुआत हुई है। देश में दीर्घकालिक ऊर्जा सुरक्षा प्रदान करने और स्वदेशी परमाणु प्रौद्योगिकी क्षमताओं को आगे बढ़ाने की दिशा में यह एक ऐतिहासिक कदम है। यह उपलब्धि परमाणु ऊर्जा नियामक बोर्ड की सभी शर्तों को पूरा करने के बाद मिली, जिसने संयंत्र प्रणालियों की सुरक्षा की गहन समीक्षा के बाद इसे मंजूरी मिली थी। हमारे लिये गर्व की बात यह है कि फास्ट ब्रीडर रिएक्टर प्रोटोटाइप का प्रौद्योगिकी विकास और डिज़ाइन परमाणु ऊर्जा विभाग के अनुसंधान और विकास केंद्र इंदिरा गांधी परमाणु अनुसंधान केंद्र में स्वदेशी रूप से हुआ है। इसका निर्माण और चालू करने का कार्य परमाणु ऊर्जा विभाग के तहत एक सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम भारतीय नाभिकीय विद्युत निगम लिमिटेड ने किया है। यह उपलब्धि इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि फास्ट ब्रीडर रिएक्टर भारत की दीर्घकालिक परमाणु रणनीति की आधारशिला हैं। पारंपरिक थर्मल रिएक्टरों के विपरीत, यह प्रोटोटाइप यूरेनियम और प्लूटोनियम के मिश्रित ऑक्साइड ईंधन का उपयोग करता है। इस संयंत्र का अंदरूनी कोर हिस्सा यूरेनियम–238 की एक परत से घिरा होता है। तीव्र न्यूट्रॉन, यूरेनियम–238 को विखंडनीय प्लूटोनियम–239 में परिवर्तित कर देते हैं, जिससे रिएक्टर अपनी ईंधन की खपत से अधिक ईंधन का उत्पादन करने में सक्षम हो जाता है। इस रिएक्टर को इस तरह से डिज़ाइन किया गया है कि भविष्य में इसकी परत में थोरियम–232 का उपयोग किया जा सके। ट्रांसम्यूटेशन की प्रक्रिया के माध्यम से, थोरियम–232 को यूरेनियम–233 में परिवर्तित किया जाएगा, जो भारत के परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम के तीसरे चरण के लिए ईंधन का काम करेगा। यह अद्वितीय क्षमता परमाणु ईंधन संसाधनों के उपयोग को काफी हद तक बढ़ा देती है और देश को अपने सीमित यूरेनियम भंडारों से कहीं अधिक ऊर्जा प्राप्त करने में सक्षम बनाती है, साथ ही भविष्य में देश में उपलब्ध थोरियम के भंडारों का बड़े पैमाने पर उपयोग करने के लिए भी तैयार करती है। पहली क्रिटिकैलिटी हासिल करने के साथ ही, भारत अपने तीन–चरणों वाले परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम की पूर्ण क्षमता को साकार करने के और करीब पहुंच गया है। फास्ट ब्रीडर टेक्नोलॉजी, प्रेशराइज्ड हेवी वॉटर रिएक्टरों के मौजूदा इकाइयों और भविष्य में थोरियम–आधारित रिएक्टरों की तैनाती के बीच एक ज़रूरी पुल का काम करेगी और देश के प्रचुर थोरियम संसाधनों का इस्तेमाल करके लंबे समय तक स्वच्छ ऊर्जा पैदा करने में मदद करेगी। यह उपलब्धि भारत के स्वदेशी डिज़ाइन, इंजीनियरिंग और मैन्युफैक्चरिंग इकोसिस्टम की ताकत को दर्शाती है। इस रिएक्टर में उन्नत सुरक्षा प्रणालियां, उच्च–तापमान वाली लिक्विड सोडियम कूलेंट टेक्नोलॉजी और एक क्लोज्ड फ्यूल साइकिल की समझ शामिल है। यह समझ परमाणु सामग्री की रीसाइक्लिंग को संभव बनाएगी, जिससे स्थिरता बढ़ेगी है और परमाणु कचरा कम होगा।।

यह प्रोजेक्ट बड़ी संख्या में उन वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, तकनीशियनों और उद्योग भागीदारों के समर्पण को भी दर्शाता है, जिन्होंने मुख्य रूप से स्वदेशी टेक्नोलॉजी और घटकों का उपयोग करके रिएक्टर के डिज़ाइन, निर्माण और संरचना में योगदान दिया है। उनके प्रयास उन्नत परमाणु इंजीनियरिंग में राष्ट्र की बढ़ती क्षमता को उजागर करते हैं और आत्मनिर्भर भारत के अनुरूप तकनीकी आत्मनिर्भरता के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को मज़बूत करते हैं। ऊर्जा उत्पादन से परे, फास्ट ब्रीडर कार्यक्रम परमाणु ईंधन चक्र टेक्नोलॉजी, उन्नत सामग्री, रिएक्टर भौतिकी और बड़े पैमाने की इंजीनियरिंग में रणनीतिक क्षमताओं को मज़बूत करता है। इस कार्यक्रम के माध्यम से विकसित ज्ञान और बुनियादी ढांचा भविष्य के रिएक्टर डिज़ाइनों और अगली पीढ़ी की परमाणु टेक्नोलॉजी विकसित करने में मदद करेगा। जैसे–जैसे भारत अपने स्वच्छ ऊर्जा पोर्टफोलियो का विस्तार कर रहा है, फास्ट ब्रीडर रिएक्टर उच्च तापीय दक्षता के साथ विश्वसनीय, कम–कार्बन और बेस–लोड बिजली प्रदान करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। इसलिए फर्स्ट क्रिटिकैलिटी की उपलब्धि न केवल एक तकनीकी मील का पत्थर है, बल्कि विकसित भारत के लिए एक स्थायी और आत्मनिर्भर ऊर्जा भविष्य की दिशा में एक बड़ा कदम भी है। परमाणु ऊर्जा सबसे स्वच्छ और सबसे भरोसेमंद ऊर्जा स्त्रोतों में से एक मानी जाती है। जो तकनीक आजकल सबका ध्यान खींच रही है, वह है थोरियम रिएक्टर। पारंपरिक यूरेनियम–आधारित प्रणालियों के मुकाबले थोरियम रिएक्टरों को कई देश भविष्य के स्वच्छ ऊर्जा मिश्रण के हिस्से के तौर पर परख रहे हैं क्योंकि इसे एक सुरक्षित और अधिक प्रचुर विकल्प के रूप में देखा जा रहा है। थोरियम रिएक्टर की कार्यप्रणाली को समझने के लिए, सबसे पहले यह जानना आवश्यक है कि थोरियम को सीधे ईंधन के रूप में उपयोग नहीं किया जा सकता है। इसके बजाय, रिएक्टर में परमाणु विखंडन प्रक्रिया का उपयोग करके थोरियम–232 को यूरेनियम–233 के ईंधन में परिवर्तित किया जाता हैं। यह परिवर्तन रिएक्टर के अंदर न्यूट्रॉन की सहायता से होता है, जिससे एक नियंत्रित श्रृंखला अभिक्रिया शुरू होती है और ऊर्जा उत्पन्न होती है। थोरियम रिएक्टर की कार्यप्रणाली को यूं समझ सकते हैं कि पहले चरण में थोरियम को थोड़ी मात्रा में यूरेनियम या प्लूटोनियम के साथ रिएक्टर कोर में डाला जाता है। यह प्रारंभिक ईंधन न्यूट्रॉन उत्सर्जित करता है जो थोरियम को यूरेनियम–233 में परिवर्तित करने में सहायता करते हैं, जो बाद में मुख्य ईंधन बन जाता है। दूसरे चरण में थोरियम–232 एक न्यूट्रॉन को अवशोषित करता है और रेडियोधर्मी क्षय के माध्यम से धीरे–धीरे यूरेनियम–233 में परिवर्तित हो जाता है। इस प्रकार बना नया यूरेनियम–233 नाभिकीय अभिक्रिया को कुशलतापूर्वक बनाए रख सकता है। तीसरे चरण में जब यूरेनियम–233 के परमाणुओं पर न्यूट्रॉन टकराते हैं, तो उनमें विखंडन होता है, जिससे भारी मात्रा में ऊष्मा निकलती है। इस ऊष्मा का उपयोग भाप बनाने के लिए किया जाता है, जो टर्बाइनों को चलाकर बिजली पैदा करती है। चौथे चरण में रिएक्टर में पैदा हुई गर्मी को सुरक्षित रूप से नियंत्रित किया जाता है। कई डिज़ाइन, जैसे कि मोल्टन सॉल्ट रिएक्टर, कम दबाव पर काम करते हैं और उनमें सुरक्षा के लिए अंतर्निहित विशेषताएं होती हैं, जिससे मेल्टडाउन का जोखिम कम हो जाता है। वरना गर्मी इतनी होती है कि खुद रिएक्टर ही गल जाए। पांचवें चरण में थोरियम रिएक्टर कम समय तक रेडियोधर्मी रहने वाला अपशिष्ट उत्पन्न करते हैं। हालांकि यह अभी भी खतरनाक है, लेकिन अपशिष्ट कम समय तक रेडियोधर्मी रहता है, जिससे इसका प्रबंधन और भंडारण आसान हो जाता है। भारत और चीन जैसे देश अपने विशाल थोरियम भंडारों और बढ़ती ऊर्जा ज़रूरतों के कारण थोरियम–आधारित तकनीकों पर सक्रिय रूप से शोध कर रहे हैं।

यह प्रोजेक्ट बड़ी संख्या में उन वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, तकनीशियनों और उद्योग भागीदारों के समर्पण को भी दर्शाता है, जिन्होंने मुख्य रूप से स्वदेशी टेक्नोलॉजी और घटकों का उपयोग करके रिएक्टर के डिज़ाइन, निर्माण और संरचना में योगदान दिया है। उनके प्रयास उन्नत परमाणु इंजीनियरिंग में राष्ट्र की बढ़ती क्षमता को उजागर करते हैं और आत्मनिर्भर भारत के अनुरूप तकनीकी आत्मनिर्भरता के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को मज़बूत करते हैं।

विशेषज्ञों का मानना है कि भविष्य में स्वच्छ और अधिक टिकाऊ बिजली उत्पादन में यह तकनीक अहम भूमिका निभा सकती है। भारत में थोरियम आधारित परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम एक दीर्घकालिक रणनीति का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य देश के विशाल थोरियम भंडार का उपयोग करके ऊर्जा आत्मनिर्भरता प्राप्त करना है। भारत के पास यूरेनियम की तुलना में थोरियम का बहुत बड़ा भंडार है, खासकर केरल, तमिलनाडु और ओडिशा के तटीय इलाकों में। इसी कारण भारत ने थोरियम आधारित परमाणु ऊर्जा को विकसित करने पर विशेष ध्यान दिया है। इस कार्यक्रम की शुरुआत प्रसिद्ध वैज्ञानिक होमी जहांगीर भाभा ने की थी। भारत ने थोरियम के उपयोग के लिए 3–स्टेज न्यूक्लियर प्रोग्राम बनाया है जिसमें पहला चरण प्रेसराइज्ड हेवीवाटर रिएक्टर का है जिसमें यूरेनियम–238 ईंधन से प्लूटोनियम–239 बनाया जाता है। दूसरे चरण में फास्टब्रीडर रिएक्टर प्लूटोनियम का उपयोग करके अधिक ईंधन (यूरेनियम–233) बनाता है। यह चरण थोरियम उपयोग की तैयारी करता है। कल्पक्कम फास्ट ब्रीडर रिएक्टर इस चरण का प्रमुख प्रोजेक्ट है। इसके आगे तीसरे चरण में थोरियम आधारित रिएक्टर थोरियम–232 को यूरेनियम–233 में बदलेगा। यही भविष्य का लक्ष्य है। इस प्रमुख थोरियम आधारित प्रोजेक्ट में भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र द्वारा एडवांस हेवी वाटर रिएक्टर विकसित किया जा रहा है जिसमें थोरियम और यूरेनियम–233 को मिलाकर ईंधन बनाया जाएगा। इसकी विशेषता यह है कि वह अधिक सुरक्षित है तथा कम रेडियोधर्मी कचरा पैदा करता है। लंबे समय तक ऊर्जा उत्पादन के लिये थोरियम के अनेक फायदे गिनाए जाते हैं। सबसे बड़ा फायदा तो यह कि थोरियम भारत में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है जो अधिक सुरक्षित और कम जोखिम वाला इसलिए है कि वह कम परमाणु कचरा उत्पन्न करता है और देश के लिये दीर्घकालिक ऊर्जा समाधान उपलब्ध कराता है। लेकिन इसकी चुनौतियां भी है। यह तकनीक अभी विकास के चरण में है। यूरेनियम–233 का उत्पादन जटिल होता है जिसे भारतीय वैज्ञानिक अपनी मेधा से पार पा रहे हैं। इस प्रौद्योगिकी की प्रारंभिक लागत अधिक होती है, लेकिन यदि यह सफलता पूर्वक हासिल कर ली जाती है तो बाद में दीर्घ काल तक मुनाफा देने वाली साबित होती है। यह भी सही है कि अभी यह प्रौद्योगिकी विकास के चरण में हैं और इसका वाणिज्यिक स्तर पर उपयोग अभी पूरी तरह हासिल नहीं किया जा सका है। वर्तमान स्थिति पर नजर डालें तो भारत अभी इस तकनीक के दूसरे चरण पर काम कर रहा है। थोरियम आधारित रिएक्टर तीसरा चरण होगा जिस पर अनुसंधान जारी है। इसलिए नई तकनीक से बड़े पैमाने पर बिजली उत्पादन का लक्ष्य अभी दूर है। मगर भारत का थोरियम आधारित परमाणु कार्यक्रम भविष्य के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। यदि यह सफल होता है, तो भारत ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन सकता है और स्वच्छ ऊर्जा उत्पादन में दुनिया का अग्रणी देश बन सकता है।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

चिकित्सक : वर्षों की तपस्या, भारी निवेश और समाज की विडम्बना

रोटेरियन सुनील दत्त गोयल

हमारे समाज में एक गहरा और चिंताजनक विरोधाभास मौजूद है। एक ओर हम चिकित्सक को भगवान का रूप कहकर सम्मानित करते हैं, वहीं दूसरी ओर व्यवहार में उसी चिकित्सक के श्रम, ज्ञान और समय का मूल्य देने से बचते हैं। यह विरोधाभास केवल शब्दों और व्यवहार का अंतर नहीं है, बल्कि यह उस मानसिकता का प्रतिबिंब है जिसमें हम सेवा और पेशेवर मूल्य के बीच का अंतर समझने में असफल रहते हैं।

सबसे पहले यह समझना आवश्यक है कि एक डॉक्टर बनना किसी सामान्य डिग्री हासिल करने जैसा नहीं है। यह एक लंबी, कठिन और अत्यधिक प्रतिस्पर्धात्मक यात्रा है, जिसमें 15 से 20 वर्षों तक लगातार अध्ययन, प्रशिक्षण और मानसिक दबाव शामिल होता है। एक छात्र को सबसे पहले एनइइटी जैसी कठिन परीक्षा को पास करना होता है, जिसमें लाखों विद्यार्थी भाग लेते हैं, लेकिन सीटें सीमित होती हैं। इसके बाद एमबीबीएस की 5.5 वर्षों की पढ़ाई, जिसमें थ्योरी के साथ–साथ व्यावहारिक प्रशिक्षण और इंटर्नशिप शामिल होती है। लेकिन यह यात्रा यहीं समाप्त नहीं होती। एक सामान्य डॉक्टर बनने के बाद भी यदि कोई विशेषज्ञ बनना चाहता है, तो उसे पीजी (एमडी/एमएस) करना पड़ता है, जिसके लिए फिर से कठिन प्रतिस्पर्धा का सामना करना होता है। इसके बाद भी कई डॉक्टर सुपर–स्पेशलाइजेशन (डीएम/एमसीएच) करते हैं, जिससे उनकी कुल तैयारी का समय 15–20 वर्ष तक पहुँच जाता है।

इस पूरी प्रक्रिया में केवल समय ही नहीं, बल्कि आर्थिक निवेश भी अत्यधिक होता है। सरकारी कॉलेज में पढ़ाई करने वाले छात्रों को कुछ राहत मिलती है, लेकिन निजी मेडिकल कॉलेजों में फीस लाखों से लेकर करोड़ों तक पहुँच जाती है। कई परिवार अपने जीवनभर की बचत, जमीन–जायदाद, या कर्ज लेकर अपने बच्चों को डॉक्टर बनाते हैं।

यह निवेश केवल पैसे का नहीं होता – यह समय, मानसिक शांति, सामाजिक जीवन और युवावस्था के त्याग का निवेश होता है।

अब प्रश्न यह उठता है कि इतने बड़े त्याग और निवेश के बाद जब वही व्यक्ति डॉक्टर बनकर समाज के सामने आता है, तो क्या उसे वह सम्मान मिलता है जिसका वह अधिकारी है?

वास्तविकता इसके ठीक विपरीत है। समाज के कई वर्ग डॉक्टर को सेवा प्रदाता के रूप में तो देखते हैं, लेकिन उसे एक पेशेवर के रूप में स्वीकार करने में संकोच करते हैं।

मोहल्ले का किराने वाला डॉक्टर से हर वस्तु का पूरा पैसा लेता है, लेकिन डॉक्टर से मुफ्त में सलाह लेना अपना अधिकार समझता है। ट्यूशन पढ़ाने वाला शिक्षक अपनी फीस पूरी लेता है, लेकिन डॉक्टर से स्वास्थ्य संबंधी सलाह मुफ्त चाहता है।

यहाँ तक कि कई बार घर के कर्मचारी, परिचित और रिश्तेदार भी यही अपेक्षा रखते हैं कि डॉक्टर उनके लिए बिना शुल्क के उपलब्ध रहे।

यह मानसिकता केवल आर्थिक असंतुलन नहीं दर्शाती, बल्कि यह इस बात का संकेत है कि हम डॉक्टर के ज्ञान और समय का मूल्य नहीं समझते।

हर व्यक्ति डॉक्टर से लाभ लेना चाहता है, लेकिन उनके ज्ञान का मूल्य देने को तैयार नहीं होता।

विडम्बना यहीं समाप्त नहीं होती। जब डॉक्टर स्वयं किसी अन्य सेवा क्षेत्र में जाता है – चाहे वह वकील हो, इंजीनियर हो, दुकानदार हो या कोई अन्य पेशेवर – तो उनसे पूरा शुल्क लिया जाता है, कई बार अधिक भी।

अर्थात, समाज को डॉक्टर से सेवा तो चाहिए, लेकिन मुफ्त में! लेकिन डॉक्टर को कोई भी सर्विस या सामान बेचने वालों को पूरा पैसा चाहिए और उन्हें भी पेशेवर मानने में संकोच करते हैं। हम यह नहीं सोचते की हमारे यहाँ जो रिपेरिंग सर्विस वाले लोग आते हैं वो एक विजिट का हज़ार रुपए तक चार्ज कर लेते हैं लेकिन हमें डॉक्टर को पांच सौ रुपए की फीस देने में तकलीफ होती है। हमें हमारी यही सोच बदलनी होगी। जबकि दोनों की कार्यकुशलता की तुलना अकल्पनीय है।

स्थिति और गंभीर तब हो जाती है जब कोई आपातकालीन परिस्थिति उत्पन्न होती है। डॉक्टर अपनी पूरी क्षमता, अनुभव और ज्ञान का उपयोग करते हुए मरीज को बचाने का प्रयास करता है। लेकिन यदि परिणाम अनुकूल नहीं आता, तो वही डॉक्टर अचानक लापरवाह, लुटेरा या अयोग्य घोषित कर दिया जाता है।

क्या यह किसी अन्य पेशे में देखने को मिलता है?

क्या किसी वकील के केस हारने पर उसके साथ हिंसा होती है?

क्या किसी इंजीनियर की गलती पर भीड़ अस्पताल जैसी प्रतिक्रिया देती है?

हाल ही में एक ब्यूटी क्वीन ने अपने इंटरव्यू में कहा कि भारत में डॉक्टर होना आसान नहीं है – लंबे काम करने के घंटे, अत्यधिक तनाव, सीमित संसाधन और उसके बावजूद बहुत अधिक अपेक्षाएँ।

पूरी कोशिश करने के बाद भी यदि परिणाम अनुकूल न हो, तो दोष अक्सर डॉक्टर पर ही आ जाता है।

उन्होंने यह भी बताया कि मेडिकल क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए उन्हें अभी कई वर्षों तक कठिन पढ़ाई करनी होगी, मुश्किल से लोन मिलेगा, और उसके बाद यदि वे नर्सिंग होम खोलती हैं तो उन्हें प्रशासनिक, आर्थिक और सामाजिक चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। किसी मरीज के न बच पाने की स्थिति में तोड़फोड़, दबाव और पुलिस तक की नौबत आ सकती है।

इसके विपरीत, एक ब्यूटी कॉन्टेस्ट जीतने के बाद तुरंत करोड़ों के असाइनमेंट और एंडोर्समेंट के अवसर मिलते हैं, और जहाँ भी जाएँ, वीआइपी ट्रीटमेंट मिलता है।

यह विडम्बना है कि जो पेशा जीवन बचाता है, उन्हें न सम्मान मिलता है, न सुरक्षा – और जो पेशा केवल मनोरंजन से जुड़ा है, उन्हें विशेषाधिकार मिलते हैं।

समाज की यह विडम्बना और स्पष्ट तब होती है जब हम देखते हैं कि कई ऐसे लोग, जिनकी गतिविधियाँ सीधे तौर पर जनहित के खिलाफ हैं, समाज में सम्मान प्राप्त करते हैं।

खराब सड़कों का निर्माण करने वाले ठेकेदार, शराब के ठेके चलाने वाले व्यापारी, बड़े घोटाले करने वाले नेता – ये सभी समाज में प्रभावशाली और सम्मानित बने रहते हैं। लोग उनके साथ फोटो खिंचवाकर गर्व महसूस करते हैं। लेकिन जो डॉक्टर दिन–रात लोगों की जान बचाने में लगा है, उन्हें अपमानित करने में कोई संकोच नहीं होता।

जब जिम्मेदारी तय करने की बात आती है, तब भी समाज का दृष्टिकोण असंतुलित दिखाई देता है।

शराब और तम्बाकू के सेवन से शरीर को नुकसान पहुँचाने वाला व्यक्ति जब अस्पताल पहुँचता है और स्थिति गंभीर हो जाती है, तो गुस्सा डॉक्टर पर निकलता है – न कि उन कारणों पर जो बीमारी की जड़ में थे।

खराब सड़क के कारण हुई दुर्घटना में घायल व्यक्ति की मृत्यु होने पर भी दोष डॉक्टर की लापरवाही पर डाल दिया जाता है, न कि उस प्रणाली पर जिसने दुर्घटना को जन्म दिया।

आज के समय में यह कहना बहुत आसान हो गया है –

डॉक्टर ने मरीज मार दिया।

यह कथन न केवल तथ्यहीन है, बल्कि यह उस पेशे के प्रति गहरी असंवेदनशीलता को दर्शाता है, जो पूरी तरह सेवा, समर्पण और जिम्मेदारी पर आधारित है।

वास्तविकता यह है कि डॉक्टर हर दिन ऐसे निर्णय लेता है, जहाँ एक छोटा सा अंतर जीवन और मृत्यु के बीच की दूरी तय कर सकता है।

उनके सामने आने वाला हर केस अलग होता है, हर मरीज की स्थिति अलग होती है, और हर निर्णय में जोखिम होता है।

इसके बावजूद, डॉक्टर को हर समय यह भय रहता है कि कहीं कोई आरोप न लग जाए, भीड़ इकट्ठी न हो जाए, या हिंसा का सामना न करना पड़े।

क्योंकि जो मरीज ठीक हो जाता है, वह सार्वजनिक रूप से डॉक्टर की सराहना नहीं करता। लेकिन यदि कोई घटना नकारात्मक हो जाए, तो वह तुरंत चर्चा और आलोचना का विषय बन जाती है।

यह समझना अत्यंत आवश्यक है कि चिकित्सा केवल विज्ञान नहीं है – यह विश्वास पर आधारित प्रणाली है।

जहाँ विश्वास समाप्त होता है, वहाँ उपचार की प्रभावशीलता भी प्रभावित होती है।

डॉक्टर बिना किसी भेदभाव – जाति, धर्म, भाषा या आर्थिक स्थिति – के हर मरीज का इलाज करता है। वह उन परिस्थितियों में भी सेवा करता है, जहाँ कई बार मरीज के अपने परिजन भी आगे आने से कतराते हैं।

डॉक्टर और नर्सें बिना किसी दिखावे के दिन–रात सेवा में लगे रहते हैं। यही उनकी पेशेवर प्रतिबद्धता और मानवीय संवेदनशीलता है।

हालाँकि, यह भी स्वीकार करना आवश्यक है कि चिकित्सा क्षेत्र पूरी तरह निर्दोष नहीं है।

समय–समय पर मेडिकल इंश्योरेंस कंपनियों द्वारा कुछ अस्पतालों और डॉक्टरों को ब्लैकलिस्ट किया जाता है। यह दर्शाता है कि पेशे के भीतर भी सुधार की आवश्यकता है।

कई अस्पतालों में आर्थिक दबाव के कारण डॉक्टरों पर टारगेट थोपे जाते हैं। इन टारगेट्स को पूरा करने के लिए अनावश्यक जांचें , दवाइयां और सर्जरी की जाती हैं, जिससे जनता का विश्वास कमजोर होता है। फलस्वरूप मरीज का शरीर ख़राब होता है और परिवार हर तरीके से बर्बाद हो जाता है।

इसलिए यह समस्या एक तरफा नहीं है – यह दोतरफा जिम्मेदारी का विषय है।

समाज को डॉक्टरों के प्रति सम्मान और विश्वास बनाए रखना होगा, और डॉक्टरों तथा अस्पतालों को अपनी नैतिकता और पारदर्शिता सुनिश्चित करनी होगी।

लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि समाज को यह समझना होगा कि –

एक डॉक्टर केवल सेवा देने वाला व्यक्ति नहीं है, बल्कि वह वर्षों की कठोर मेहनत, त्याग और भारी निवेश का परिणाम है।

यदि हम आज भी डॉक्टर के ज्ञान और समय को मुफ्त सेवा समझते रहेंगे, तो आने वाले समय में योग्य और प्रतिभाशाली युवा इस पेशे से दूर होने लगेंगे।

और जब समाज को सबसे अधिक आवश्यकता होगी, तब योग्य डॉक्टरों की कमी एक गंभीर संकट का रूप ले सकती है।

अंततः, किसी भी समाज की मजबूती उसके मूल स्तंभों पर निर्भर करती है।

गुरु और चिकित्सक – ये दोनों ही समाज के ऐसे स्तंभ हैं, जो संकट के समय दिशा और जीवन दोनों प्रदान करते हैं।

यदि इन दोनों का सम्मान कम होता है, तो समाज का संतुलन भी धीरे–धीरे कमजोर होने लगता है।

जापान में कई दुकानों और संस्थानों पर स्पष्ट रूप से लिखा होता है कि शिक्षकों और चिकित्सकों को विशेष छूट दी जाती है। यह केवल आर्थिक लाभ नहीं, बल्कि उनके प्रति समाज के वास्तविक सम्मान का प्रतीक है, जहाँ ज्ञान देने और जीवन बचाने वालों को व्यवहार में प्राथमिकता दी जाती है। इसके विपरीत, भारत में हम भले ही डॉक्टरों और शिक्षकों को शब्दों में भगवान का दर्जा देते हों, लेकिन व्यवहार में उनके समय, ज्ञान और योगदान का उचित मूल्य नहीं समझते। यह अंतर हमारी सामाजिक सोच को दर्शाता है और यह संकेत देता है कि हमें भी सम्मान को केवल कहने तक सीमित न रखकर उसे अपने व्यवहार में उतारना सीखना होगा।

डॉक्टर और पुलिस हमेशा आपातकालीन नाइट ड्यूटी पर उपलब्ध रहते हैं, और देर रात किसी दुर्घटना के होने पर सबसे पहले डॉक्टर को फोन करके जगाया जाता है। पता नहीं, डॉक्टर कितनी रातें ठीक से सो पाते होंगे।

इसलिए यह समय है कि हम अपनी सोच में बदलाव लाएँ –

डॉक्टर को केवल भगवान का रूप कहने के बजाय, उन्हें एक सम्मानित, प्रशिक्षित और मूल्यवान पेशेवर के रूप में स्वीकार करें।

क्योंकि सम्मान केवल शब्दों से नहीं, बल्कि व्यवहार से प्रकट होता है।

–रोटेरियन सुनील दत्त गोयल,
महानिदेशक, इम्पीरियल चैंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री।

नया सवेरा

सुनीता चावला

जब लालिमा छिप जाती है,
और शाम ढलने लगती है..!
तब मत समझना हार हुई,
एक नई आस जगती है..!!

सूर्यास्त तो बस एक पर्दा है,
जो रात की गोद में सोता है..!
पर याद रहे हर रात के बाद,
फिर सूर्योदय ही होता है..!!

अंधेरा कितना भी गहरा हो,
वह सूरज को रोक नहीं पाता..!
थककर जो सो जाता है आज,
कल फिर चमकने आता है..!!

हार - जीत के इस द्वंद में,
डर मत हिम्मत मत हार..!
देखना सूर्यास्त के बाद,
फिर एक नया सवेरा आता है..!!

–सुनीता चावला,
शिक्षक।

तापमान 43 डिग्री तक पहुंचने के आसार

बीकानेर, (निसं)। शहर में गर्मी ने अब तेवर दिखाने शुरू कर दिए हैं। बीते 24 घंटे में अधिकतम और न्यूनतम तापमान में करीब 2 डिग्री सेल्सियस तक की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। मौसम विभाग के अनुसार, बीकानेर का अधिकतम तापमान 40.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो सामान्य से 1.9 डिग्री ज्यादा है। वहीं बीती रात न्यूनतम तापमान 27.4 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 2 डिग्री अधिक है।

उधर, गर्मी के कारण बीकानेर के अधिकांश तालाब सूखकर मैदान बन गए हैं। मौसम विभाग ने संकेत दिए हैं कि अब शहर में हीटवेव का दौर शुरू हो सकता है। आने वाले दिनों में तापमान 40 डिग्री सेल्सियस से ऊपर ही बना रहेगा। खासतौर पर 23 अप्रैल को पारा 43 डिग्री सेल्सियस तक पहुंचने की संभावना जताई गई है। इसके बाद हल्की गिरावट हो सकती है, लेकिन तापमान 41 डिग्री सेल्सियस से नीचे आने के आसार नहीं हैं।

प्री–बीएड में 1.06 लाख सीटों पर 92 हजार आवेदन आये

सीटों के मुकाबले आवेदन कम आने पर अंतिम तिथि 5 मई तक बढ़ी

बीकानेर, (निसं)। बीएड करने के इच्छुक अभ्यर्थियों के लिए अच्छा मौका है। इस बार प्री–बीएड परीक्षा में सीटों के मुकाबले आवेदन कम हो रहे हैं। ऐसे में बीएड करने वाले अभ्यर्थियों का प्रवेश निश्चित नजर आ रहा है।

नोडल एजेंसी वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय कोटा ने 20 फरवरी से पीटीईटी प्रवेश परीक्षा के ऑनलाइन आवेदन की प्रक्रिया शुरू की थी। पूर्व में ऑनलाइन आवेदन की अंतिम तिथि 20 मार्च निर्धारित की गई थी। उसके बाद अंतिम तिथि को 20 अप्रैल तक बढ़ाया गया। 20 अप्रैल तक ऑनलाइन आवेदन करने वाले अभ्यर्थियों की संख्या लगभग 92 हजार के करीब है, जबकि प्रदेश के 944 कॉलेज में दो वर्षीय बीएड पाठ्यक्रम की सीटें 1.06 लाख के करीब हैं। सीटों के मुकाबले आवेदन कम आने पर नोडल एजेंसी ने इच्छुक अभ्यर्थियों को आवेदन करने का एक मौका और दिया है। अब अभ्यर्थी 5 मई तक ऑनलाइन आवेदन कर सकेंगे। आवेदन की अंतिम तिथि में 15 दिन की बढ़ोतरी की गई है। प्रवेश परीक्षा का आवेदन शुल्क 500 रुपए निर्धारित है। नोडल एजेंसी में ऑनलाइन आवेदन में त्रुटि सुधार की अंतिम तिथि भी 7 मई तक बढ़ा दी गई है। पूर्व में त्रुटि सुधार की अंतिम तिथि 22 अप्रैल निर्धारित थी। अभ्यर्थी 200 रुपए शुल्क देकर ऑनलाइन आवेदन में संशोधन कर सकेंगे। हालांकि नाम, फोटो, हस्ताक्षर जैसे मूल विवरण में बदलाव नहीं होगा।

राशिफल बुधवार 22 अप्रैल, 2026

पंडित अनिल शर्मा

वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, षष्ठि तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2083, आर्द्रा नक्षत्र रात्रि 10:13 तक, अतिगंड योग प्रातः 9:08 तक, कौलव करण दिन 12:05 तक, चन्द्रमा मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य–मेष, चन्द्रमा–मिथुन, मंगल–मीन, बुध–मीन, गुरू–मिथुन, शुक्र–वृष, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह

आज रवियोग रात्रि 10:13 तक है। कुमार योग रात्रि 10:13 से रात्रि 10:50 तक है। आज चन्दन छठ है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः लाभ–अमृत सूर्योदय से 9:13 तक, शुभ 10:49 से 12:25 तक, चर 3:38 से 5:14 तक, लाभ 5:14 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:00, सूर्यास्त 6:50

मेष
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आज परिजनों के सहयोग से चल रही परेशानियां दूर होने लगेगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

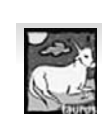

वृष
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक सफलता से आत्मविश्वास बढ़ेगा।

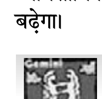

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिल सकती है। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

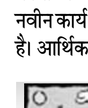

कर्क
व्यक्तिगत परेशानियों के कारण मानसिक तनाव बना रहेगा। समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है।

सिंह
आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा। धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में सफलता से मनोबल बढ़ेगा। शुभ कार्यों में भाग ले सकते हैं।

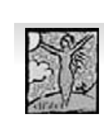

कन्या
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

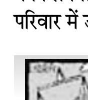

तुला
नवीन कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद दूर होंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

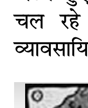

वृश्चिक
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। खान–पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

धनु
परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त–व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच–विचार हो सकता है।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। घर–परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

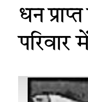

मीन
घर–परिवार में धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में सुख–सुविधाएं एवं सुख–शांति बनी रहेगी।